‘बदलते सामाजिक विश्वास एवं जादू-टोने का अध्ययन’
(इलाहाबाद के ग्रामीण क्षेत्र के संदर्भ में)
‘The Study of Changes in Social Belief and Magic- Sorcery’
(With reference to the rural area of Allahabad)

एम. फिल. मानवविज्ञान उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध

(सत्र- 2014-2015)

शोधार्थी

धीरज उपाध्याय

एम. फिल. मानवविज्ञान

(Reg. No. 2014/05/201/001)

मानवविज्ञान विभाग

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदीविश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

अध्याय-1
प्रस्तावना

विश्वास एक ऐसा शब्द या पद है जिसका इस्तेमाल तकनीकी रूप से, अव्यवस्थित रूप से और दृढ़ताके रूप में किया जाता है। परंतु सामान्यतः ये मनुष्य के कुछ अनदेखे भावनात्मक गतिविधि के रूप में जाना जाता है। 'विश्वास' शब्द बहुत अधिक भ्रमित करने वाला शब्द है जिसको मनोविज्ञानी, राजनीतिविज्ञानी और मानव विज्ञानियों ने अपने-अपने अनुसार अर्थों में प्रयोग किया है। मानवविज्ञानी शोध के अनुसार प्रकार्यात्मक रूप से देखा जाए तो विश्वास और ज्ञान के बीच कोई अंतर नहीं है। इसलिए मानवविज्ञानियों ने ज्ञान को विश्वास के रूप में ही विस्तारित किया है। प्रत्येक मानव के पास अपना-अपना एक विश्वास तंत्र होता है जिसका वो अपने जीवन में इस्तेमाल करता है। यह एक अनोखी ज्ञान प्रणाली है जिसे मानवविज्ञानी विश्वास के रूप में वर्णित करते हैं। हम सभी जानते हैं कि सभी समाजों में कुछ ऐसे विश्वास हैं जिन्हें सामूहिक रूप से धर्म का नाम दिया जा सकता है। यह विश्वास समय और संस्कृति के अनुसार बदलते रहते हैं। किन्तु विविधतापूर्ण होने पर भी धर्म को अलौकिक शक्तियों से संबन्धित मनोवृत्तियों, विश्वासों तथा क्रियाओं का समूह कहा जा सकता है चाहे यह शक्तियाँ मात्र बल हों, चाहें देवता, आत्मा, भूत-प्रेत अथवा पिशाच हों। मानवविज्ञानियों के अनुसार ज्ञात सभी समाजों में विश्वास तंत्र होता है और उसका पालन किया जाता है।[1]

प्रस्तुत शोध में इलाहाबाद के ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक विश्वास का मानवविज्ञानी दृष्टिकोण से गहनता के साथ अध्ययन किया गया है। अध्ययन का एक उद्देश्य सामाजिक विश्वासों के प्रकार्य को भी समझना है।

राम आहूजा[2] (2010) के अनुसार "समाज एक से अधिक लोगों के समुदाय को कहते हैं जिसमें सभी व्यक्ति मानवीय क्रियाकलाप करते हैं। मानवीय क्रियाकलाप में आचरण, सामाजिक सुरक्षा और निर्वाह आदि की क्रियाएं सम्मिलित होती हैं। समाज लोगों का ऐसा समूह होता है जो अपने अंदर के लोगों के मुकाबले अन्य समूहों से काफी कम मेल-जोल रखता है। किसी समाज के अंतर्गत आने वाले व्यक्ति एक दूसरे के प्रति परस्पर

[1] John

[2] आहूजा,राम. (2008). समाजशास्त्र विवेचना एवं परिपेक्ष्य. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स.

स्नेह तथा सहृदयता का भाव रखते हैं। दुनिया के सभी समाज अपनी एक अलग पहचान बनाते हुए अलग-अलग रस्मों-रिवाज़ों का पालन करते हैं।" इसी तरह दुनिया के सभी समाजों में अपने अपने सामाजिक विश्वास होते हैं। जैसे कई समाजों में आत्मवाद या जीववाद पर विश्वास किया जाता है, कई में बोंगावाद पर, कई में प्रकृतिवाद पर , कई में टोटमवाद , कई में निषेधों पर, कहीं पर पूर्वज-पूजा में, कहीं पर बहुदेववाद और कई समाज में जादू-टोने पर विश्वास किया जाता है, साथ ही साथ भूत-प्रेत पर भी। इन विश्वासों के पीछे कई सामाजिक घटनाएँ प्रचलित हैं, जिनसे समाज में इन पर विश्वास किया जाता है। जैसे हिन्दू और मुसलमान दोनों ही भाग्यवादी होते हैं और यह मानते हैं कि जो हमारे भाग्य में लिखा है वही होगा। या फिर ये कहते हुए सुना जा सकता है कि भगवान की इच्छा को टाल नहीं सकते।

सभी समाज में अपने- अपने विश्वास होते हैं तथा उनका पालन किया जाता है। पुरातत्वेत्ताओं के अनुसार उन्हें होमो सैपियन्स से जुड़े धार्मिक विश्वास के संकेत्त मिले हैं । उस समय के लोगों का विश्वास था कि मृत लोगों के साथ उनके औज़ार और भोजन भी दफनाया जाता था ताकि वे लोग अपने आने वाले जन्म में उन वस्तुओं का उपयोग कर सकें। इसी तरह हर समाज का अपना एक मिथक होता है जो कि उन्हें यह बताता है कि उनकी या इस सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई है। हर समाज में कुछ ऐसे निषेध पाये जाते हैं जिसका पालन न करने से उस समाज में कई तरह की बीमारी या समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज में इस तरह के विश्वास अगर हैं तो उनके पीछे कोई न कोई प्रमुख कारण जरूर होगा क्योंकि मैलिनोस्की महोदय का मानना है कि समाज में किसी भी तरह की कोई मान्यता अगर है तो अवश्य ही उसका कोई-न-कोई प्रकार्य जरूर है। यह विश्वास हर समाज को कहीं-न-कहीं एक दूसरे से जोड़ने का प्रयास भी करते हैं, साथ ही साथ इन विश्वासों से उस समाज की जो अनसुलझी समस्या है जिससे वो डरता है उससे भी वो निजात दिलाने में सहायता करते हैं। जैसे कि कुछ लोग जब जोखिम भरे काम करते हैं तो वह गंडे -ताबीज आदि पहन कर अपनी सुरक्षा करते हैं। इसी प्रकार *जॉन पोगी* तथा *रिचर्ड*

पॉलनॉक[3](2004)ने न्यू इंग्लैंड की तीन गोद्यिों के 108 मछुआरों के एक यादृछिक सैंपल की बात की है। इनके अनुसार ये मछुआरे अनेक वर्जनाओं का उपयोग करते हैं। इनके अनुसार संकट और डर की अवस्था में उन्हें जितनी देर तक रहना होता है उतनी ही अधिक वे वर्जनाओं का पालन करते हैं।

इस प्रकार की धार्मिक या जादू- टोने के विश्वास हमारे सफलताओं की संभावनाओं को बढ़ाए या न बढ़ाए और संकट कम करें या न करें, किन्तु यदि हमारी चिंता को कम कर सकते हैं तो यह उपयोगी या अनुकूल माना जा सकता है। चिंता दूर होने से परोक्ष रूप से हमारी सफलता की संभावना बढ़ सकती है। कुछ लोगों का मानना है कि वर्जनाओं का पालन करने से कोई नुकसान तो है नहीं, किन्तु न करने से तो हो ही सकता है।

मानव समाज के विकास में समाज के मुख्यतः तीन स्तर आते हैं:- (1) जनजातीय स्तर (2) ग्रामीण स्तर (3) नगरीय स्तर। ये तीनों स्तर समाज में रहकर तीन प्रकार के समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन समाजों की अपनी विशेषताएं हैं। इनका अपना सामाजिक संबंधों का जाल है अपनी कार्य पद्धति है। अपना विशिष्ट पर्यावरण है। इस तरह तीनों समाज एक दूसरे से भिन्न हैं। प्रस्तुत शोध प्रारूप ग्रामीण समाज पर केन्द्रित है जिसमें सामाजिक एवं विश्वासों के जादू - टोने को केंद्र में रखा गया है। ग्रामीण समाज की अपनी संस्कृति, आर्थिक-सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक ढांचा है। ग्रामीण समाज का प्रकृति की क्रिया-कलापों में अटूट आस्था होती है।प्रकृति की असंख्य घटनाएँ इनके लिए अजनबी है व अनसमझी हैं और इनके तर्क से परे हैं। उनमें यह किसी अदृश्य शक्ति को देखते हैं। किसी सर्वशक्तिमान की कल्पना करते हैं। इसीलिए ग्रामीण धर्म की उत्पत्ति प्रकृति की क्रिया-कलापों और कृषि से कहीं गहरे रूप से जुड़ी है। इसका मुख्य कारण है कि उनके जीवन का आधार प्रकृति और कृषि है। इसलिए वे पेड़-पौधे, पशु, हल-बैल, नदी, पहाड़, वर्षा, सूर्य आदि की पूजा करते हैं।

ग्रामीण समाज में धार्मिक पुस्तकों के आधार पर धर्म की व्याख्या नहीं की गयी है। ग्रामीण धर्म लोक आचरण में झलकता है। ग्रामीण मान्यताएं, विश्वास, परम्पराएँ, रीति-रिवाज, ग्रामीण-गाथाएँ, ग्रामीण धर्म की

[3]JohnJ.Poggie,Jr.&RichardB. Pollanc.Dangerandritualsofavoidanceamong.Newengland.

आधारशिलायें हैं। ग्रामीणों में ये विश्वास ही उनका धर्म है। इसे हम इस तरह देख सकते हैं कि किसी परंपरागत मान्य ग्रामीण देवता के चबूतरे पर बच्चों के मुंडन तथा अन्य संस्कार किए जाते हैं। ग्रामीण समाज में जहां अनेक मंदिर हैं वहीं अनेक प्रकार के ग्रामीण देवी-देवता और *बाबा*हैंये अलग-अलग कार्यों के लिए पूजे जाते हैं। जैसे कृषि संबन्धित देवी-देवता और '*बाबा*'अलग हैं जो विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक संकटों के लिए पृथक '*बाबा*'हैं। इन देवी देवताओं और *बाबाओं* की व्याख्या धार्मिक ग्रन्थों में नहीं मिलती है।इस तरह कई स्थानीय देवी-देवताओं की पूजा और धार्मिक संस्कार मिल कर समुदाय के विकास और धर्म की प्रणाली की जटिलता में वृद्धि कर देते हैं।

जादू शब्द का अर्थ यदि विस्तृत रूप में लिया जाए तो इसके अंतर्गत भूत-प्रेत विद्या और जादू-टोना भी आ जाते हैं। वास्तव में जादू और जादू-टोना मनुष्य के विश्वास, मान्यता और व्यवहार में अंतर्निर्भर प्रघटनाएँ हैं । जनजाति और ग्रामीण समाज में यह विचार बहुत महत्वपूर्ण है कि मनुष्य पर आपत्तियाँ आने का उनका लोगों के साथ आचारहीन व्यवहार है। कभी-कभी मनुष्य अपने विशिष्ट दुर्भाग्य के लिए मनुष्य को ही उत्तरदायी मानता है, और ऐसी अवस्था में वह जादू द्वारा दूसरे मनुष्य से बदला या उससे बचाव करता है। सभी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि एक व्यक्ति जादू द्वारा ईश्वर की शक्तियों को अपने नियंत्रण में लाता है और इस शक्ति का प्रयोग अपनी इच्छानुसार करता है।श्यामचरण, दुबे (2002) ने जादू की व्याख्या में लिखा है कि " यह वह अतिनिद्रिय शक्ति है जिससे अतिमानवीय जगत या उसकी कतिपय स्थितियों पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सके और जिसकी क्रियाओं को अपनी इच्छानुसार भले-बुरे, शुभ-अशुभ उपयोग में लाया जा सकें।[4]

जादू-टोना, भूत-प्रेत, डाकिन-पिशाच आदि के साथ जो विचार लगे हुए हैं, वे इस बात को बताते हैं कि जब कभी किसी व्यक्ति, समाज या समूह पर दुर्भाग्य अथवा बीमारी और मृत्यु, विधिवंश और विश्वास आता है तो यह समझा जाता है कि इसके पीछे मनुष्य के कुछ कार्य हैं। प्रिचार्ड,(1957) के अनुसार कुछ दुष्टलोग हैं जिनके जादू-टोने से समाज या व्यक्ति पर यह आपत्ति आई है।जादू-टोना एक सामाजिक क्रिया है- शुद्ध और सादी। इसमें

[4]दुबे,श्यामचरण. (2002). भारतीय ग्राम. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

मानसिक क्रिया के शारीरिक दोनों क्रियाएँ हैं। शारीरिक रूप से नज़र लगाने में कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है, लेकिन इसका मानसिक प्रभाव यह है कि सामने वाला व्यक्ति रोगी हो जाता है, जो किसी भी समाज के विकास एवं परिवर्धन में रोधक माना जा सकता है। अतः किसी भी ग्रामीण समाज के सामाजिक एवं पारंपरिक विश्वासों का अध्ययन किया जाना अति आवश्यक है। जिसके केंद्र में जादू और टोना को रखा है जो किसी भी समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, एवं भौगोलिक पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही साथ इन पारंपरिक विश्वासों को प्रदर्शित करने वालों जैसे- ओझा-शोखा के जीवन इतिहास का भी अध्ययन किया जाना अति आवश्यक है।

विषय का चुनाव-

भारत में विश्वास केवल परंपरागत तत्व या विचार नहीं है अपितु यह भारतीय समाज के सामाजिक मूल्यों एवं उनके पारंपरिक विश्वास का प्रतीक है। भारतीय ग्रामीण समाज के विभिन्न पक्षों का अध्ययन इसलिए अति आवश्यक हो जाता है क्योंकि यह समाज लगातार परिवर्तनों से गुजरता रहा है जिससे समाज के मूल तत्व भी परिवर्तित होते रहते हैं अर्थात ग्रामीण समाज के मूल तत्व जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं पारंपरिक विश्वासों से है। जो परिवर्तनशील समाज का अति सूक्ष्म ग्राही पक्ष होता है जिसका अध्ययन समय-समय पर किया जाना अति आवश्यक है। प्रस्तुत शोध प्रारूप भी इन्हीं बदलते सामाजिक एवं पारंपरिक विश्वासों पर आधारित है जो जादू-टोने पर विशेषीकृत है। जिसे एक ग्राम अध्ययन के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन का महत्व-

किसी भीसमाज अथवा सामाजिक पहलुओं का अध्ययन करने हेतु अंतःदृष्टि की आवश्यकता होती है जो सिर्फ गहन क्षेत्र कार्य से ही संभव हो सकता है। भारतीय समाज समय-समय पर विभिन्न परिवर्तनों से गुजर रहा है और उससे परोक्ष रूप से प्रभावित होता है। औद्योगीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीरण इत्यादि के प्रभाव से

समाज के सभी मापदंड, सामाजिक मूल्य एवं पारंपरिक विश्वास इन चीजों से पूर्णतः प्रभावित हो रहे हैं। तो यह कैसे कहा जा सकता है कि सामाजिक विश्वास जो पीढ़ी दर पीढ़ी कई सालों से चले आ रहे हैं, इन सब से बचे हों अर्थात समाज एक परिवर्तनशील इकाई है। अतः इस बदलाव के दौर में सामाजिक मूल्यों एवं विश्वासों में परिवर्तनशील या आधारभूत तथ्यों का प्रलेखन किया जाना अति आवश्यक है। बदलते सामाजिक विश्वास एवं जादू-टोना निषेध, धर्म, टोटम इत्यादि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसलिए इनका मानवशास्त्रीय विश्लेषण ग्रामीण अध्ययन के आधार पर किया जाना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध का प्रमुख महत्व यह है कि सामाजिक विश्वासों से जुड़े हुए परिवारों एवं जादू-टोने को प्रदर्शित करने वाले लोगों का सम्पूर्ण जीवन इतिहास वर्णन किया गाय है इसके साथ ही साथ नगर एवं ग्राम के बीच सामाजिक विश्वास को केंद्र में रखकर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य-

1. ग्रामीण समाज के सामाजिक मूल्यों, विश्वासों एवं उसके परिवर्तनकारी घटकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. पारंपरिक विश्वास को प्रदर्शित करने वालों का वैयक्तित्व व कृतत्व का जीवन इतिहास तैयार करना।
3. जादू-टोने का प्रकार्य का अध्ययन।

अध्ययन की सीमाएं –

1- **समय की समस्या –**एक गुणवत्तापूर्ण शोध के लिए समय की पर्याप्तता आवश्यक है। लघु शोध प्रबंध एक निश्चित और कम समय में किया गया।

2- **दूरी की समस्या -**अध्ययन क्षेत्र निवास स्थान से दूर होने के कारण समय की बर्बादी होती थी क्योंकि प्रतिदिन आने- जाने में ही ज्यादा समय लग जाता था।

3- **प्रतिकूल मौसम-**क्षेत्रकार्य अगस्त से सितंबर माह में होने के कारण गर्मी,धूप और बारिश के कारण क्षेत्रकार्य में समस्याएँ आयीं।

4- **वाहन की समस्या-** अध्ययन क्षेत्र निवास स्थान से 38 किलोमीटर दूर था जिसके चलते वाहनों की समस्याएँ आतीं थीं।

5- **सूचनादाताओं से मिलने की समस्या-** अध्ययन क्षेत्र में सूचनादाताओं से मिलने के लिए उनसे उनके अनुसार समय लेना पड़ता था।

अध्याय 8

निष्कर्ष

शोध कार्य के बाद शोधकर्ता द्वारा शीर्षक के केंद्र को बिन्दु मानकर उपर्युक्तआंकड़ों के विश्लेषण तथा वर्गीकरण के पश्चात निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाना आवश्यक होता है। यह निष्कर्ष कार्य क्षेत्र के दौरान शोध प्रविधियों के आधार पर एकत्रित किए गए आंकड़ों के विश्लेषण तथा वर्गीकरण के बाद संभव होता है। बदलते सामाजिक विश्वास एवं जादू-टोने के अध्ययन को निम्नलिखित क्रम में प्रस्तुत किया जा सकता है-

बोधा के पूरा गाँव के अध्ययन करने से यह पता चलता है कि इस गाँव में विभिन्न प्रकार के विश्वास पाये जाते हैं। जो इस गाँव के प्रत्येक व्यक्ति की दिनचर्या में देखने को मिलते हैं। जो कि पारंपरिक मूल्यों एवं विश्वासों को प्रदर्शित करता है। यह पारंपरिक मूल्य एवं विश्वास इनको यह बताते हैं कि क्या करना सही है या क्या करना निषेध है। जैसे कि शोधकर्ता ने अपने अवलोकन में देखा कि यह सुबह उठने से रात्रि तक जो भी क्रियाएँ करते हैं उसमें यह अपने इन्हीं परंपरिक मूल्यों एवं विश्वासों को शामिल करते हैं जैसे कि इस गाँव के लोगों का मानना है कि सुबह उठने पर अगर कोई प्रथम व्यक्ति इन्हें अपंग या कोई ऐसी महिला जिसके बच्चे न हो रहे हों को देखने से उस दिन उनके साथ कोई अशुभ घटना हो सकती है। इसी प्रकार यहाँ पर भोजन करने के पहले हर व्यक्ति अपनी थाली के चारों तरफ पानी की कुछ बूँदे गिराता है और उसके बाद अपनी थाली से कुछ अन्न जमीन पर रख कर ही भोजन करता है। इसका कारण यह लोग यह मानते हैं कि जो धरती उन्हें अन्न देती है उसको उस अन्न का पहला भाग दिया जाता है। इसी तरह इस गाँव में यात्रा से संबंधित, विवाह से संबंधित, गर्भधारण से संबंधित, कृषि से संबंधित मृत्यु से संबंधित अलगअलग विश्वास देखने को मिले हैं। जो इनके जीवन को शुभ-अशुभ विश्वासों से नियंत्रित करते रहते हैं।

इस शोध कार्य के द्वितीय अध्याय में शोधार्थी ने समाज में जो जादू-टोने से संबंधित गतिविधियाँ होती हैं उसको बताया है जिसका निष्कर्ष इस प्रकार है –

इस गाँव में जादू-टोने से पर विश्वास पूर्ण रूप से पाया जाता है जिसका कारण इनके पारंपरिक विश्वास है। इस गाँव के लोग भूत-प्रेत, चुड़ैल, पिशाच आदि से डरते हैं। इनका मानना है कि जब किसी व्यक्ति की मृत्यु अप्राकृतिक कारण से होती है तब उस व्यक्ति की आत्मा इधर-उधर भटकती रहती है। इन आत्माओं को ही यहाँ के लोग भूत-प्रेत आदि शब्द से बुलाते हैं। यह आत्माएँ लोगों को परेशान करती है या गाँव में बीमारियाँ लाती हैं। इन आत्माओं से बचने के लिए यहाँ के व्यक्ति गाँव के ओझा और शोखा के पास जाकर अपना उपचार करवाते हैं। यह ओझा शोखा ही जादू-टोने के द्वारा इन आत्माओं से गाँव के लोगों की रक्षा करता है। इन ओझा और शोखा को उस गाँव के उपचारकर्ता के रूप में देखा जा सकता है। गाँव के यह ओझा-शोखा जो जादू-टोना करने के लिए जाने जाते हैं वह गाँव के अन्य व्यक्तियों से अलग जीवन-यापन व्यतीत करते हैं। इन लोगों को जादू-टोना करने के लिए तंत्र-मंत्र का सहारा लेना पड़ता है। गाँव में तीन तरह के लोग जादू-टोने करने वाले है, जिन्हें गाँव के लोग ओझा, शोखा और सेवकाई बुलाते हैं। इन तीनों व्यक्तियों के पास गाँव के लोग जब किसी समस्या का सामना करते हैं तो उस समस्या का समाधान जानने के लिए जाते हैं। इन तीनों व्यक्तियों के पास अलग- अलग शक्ति होती है जिसे ये लोग देवी-देवता या अपदेवी-अपदेवता को प्रसन्न कर के प्राप्त करते हैं। जिनकी सिद्धि का समय अलग-अलग होता है। इन्हीं देवी-देवता से ये जादू-टोने के जरिये से गाँव के लोगों का कष्ट दूर करते हैं।

इसी प्रकार तीसरे अध्याय में जादू- टोने के प्रकार्य के बारे में बताया गया है जिसका निष्कर्ष निम्न है –

इस गाँव में जादू-टोने को एक संस्था के रूप में देखा जा सकता है। जैसे की मैलिनोस्की महोदय कहते हैं कि कोई भी संस्था प्रकार्यहीन नहीं हो सकती जिसको सिद्ध करने के लिए उन्होनें चार्टर मॉडल दिया है जिसके अनुसार गाँव में इस संस्था के बने होने का प्रमाण मिलता है। मैलिनोस्की के इस चार्टर मॉडल का प्रयोग कर के मैंने इस गाँव में जादू-टोने को एक संस्था के रूप में देखा है। जिसके अनुसार इस संस्था में जादूटोना करने वाले कार्यकर्ता को ओझा-शोखा कहा जाता है। इस चार्टर के 4 तवों केपी मैंने इस संस्था में पाया है जैसे कार्यकर्ता के रूप में ओझा-शोखा मानदंड के रूप में कुछ नियम जैसे कि मंत्र किस दिशा में बैठ कर पढ़ना है इन मानदंडों के बाद इसमें भौतिक उपकरण के रूप में नारियल, जायफल, आदि वस्तुएं होती हैं इसके बाद जादू-टोना करने की कुछ

निश्चित क्रियाएँ हैं जैसे हाथ-पैर को आगे-पीछे मोड़ना या *अभूआना*आदि। इन चारों चीजों के मिलने से यह जादू-टोने को एक संस्था के रूप में देखा जा सकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि इस गाँव में जो मूल्य एवं विश्वास पाये गए हैं वो इन लोगों में कई पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। इन मूल्यों एवं विश्वासों कासंबंध इनके अभौतिक संस्कृति से है जिसमें कोई भी बदलाव देखने को नहीं मिला है।